चतुर्थ अध्याय

कथावस्तु और पात्र : अभिनेयता की दृष्टि से

चतुर्थ अध्याय

कथावस्तु तथा पात्र-योजना ~ अभिनय की दृष्टि से

प्रस्तावना

नाटक का सबसे महत्वपूर्ण अंग अभिनय है। नाटक एक दृश्य काव्य है । अभिनय की दृष्टि से रंगमंच पर नाटक की सफलता नापी जाती है । नाटक का जन्म अभिनय के कारण ही हुआ है । अभिनय तथा रंगमंच की सुविधा के आधार पर ही विभिन्न देशों की नाट्य कला विकसित हुई ।निश्चय ही भारतीय एवं पाश्चात्य आचार्यों ने अभिनय की पूर्णता की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया है ।

नाटककार अभिनेयता की दृष्टि से अनेक तत्वों का विचार करता है । एक सफल नाटककार मंच की सभी व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से उपयोग में लाने का भरसक प्रयास करता है। वह अभिनेता अभिनय कला के माध्यम से कथानक के संवेगों , मनोभावों , हाव-भावों , मुख-मुद्राओं को प्रकट रूप में प्रस्तुत करता है । इस तरह यहाँ एक बात स्पष्ट हो जाती है कि नाटक की अभिनेयता के लिए कथावस्तु एवं पात्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं ।

नाटक की कथावस्तु में कौतुहल के समावेश के साथ ही कार्य व्यापार की तीव्रता होना आवश्यक है । तभी नाटक को रंगमंच पर अधिक आकर्षक और प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है । नाटक का मंचन करने के पूर्व उसकी कथावस्तु देखी जाती है । अभिनय के लिए कार्य-व्यापार अनिवार्य तत्व माना गया है । वही दर्शकों के ह्दय या मन को बाँधने और नाटक में प्राण भरने का कार्य करता है । अंक विभाजन , नाटक का प्रारंभ , संघर्ष और समाधान इस प्रकार नाटक का रचना-बंध होता है । कथानक में शृंखलाबद्धता और काल की एकता होती है , तो रंगमंचीय प्रदर्शन में सहजता आ जाती है । निरंतर पात्र तथा दृश्य परिवर्तन से दर्शकों का रसभंग हो सकता है ।

(अ) कथावस्तु

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने 'बकरी ' , ' लडाई ' , 'अब गरीबी हटाओ ' आदि नाटकों की कथावस्तु की रचना अभिनेयता की दृष्टि से ही की है । अभिनेयता की दृष्टि से इन नाटकों की कथावस्तु की आलोचना करना यहाँ अनिवार्य है ।

बकरी

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का 'बकरी ' नाटक सबसे लोकप्रिय है । स्वतंत्र भारत की शिक्षित , धर्मभीरू , गरीब , भोली-भाली जनता के मन में देव-देवताओं के प्रति तथा भारत को आजादी प्रदान करने वाले गांधी , लोहिया , जैसे महापुरूषों के प्रति होने वाली श्रद्धा का लाभ उठाकर उनपर कुछ समाजकंटक बड़ी चालाकी से अन्याय और अत्याचार करते हैं। लेखक इस नाटक द्वारा जनता को बुरी तरह पीटने वाले, लूटने वाले समकालीन स्वार्थी राजनेताओं की छिछली राजनीति का पर्दाफाश कर देते हैं । राजनेता अपने आपको सेवक मानकर जनता को बकरी बनाकर लूटते हैं । सर्वेश्वर ने 'बकरी ' नाटक के माध्यम से आम आदमी की शोषण-कथा को बडे साहस के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है ।

'बकरी ' नाटक की कथावस्तु दो अंको में विभाजित है। प्रत्येक अंक में तीन-तीन दृश्य हैं । दृश्य समाप्ति के बाद नट-नटी के गायन की योजना की गई है , जिसके माध्यम से आसन्नस्थिति का गीत द्वारा विश्लेषण किया गया है । राजनेता गाँव-वासियों की दयनीय स्थिति और उनकी मजबूरी का खुला दुरूपयोग करते हैं । उनकी गरीबी का नाजायज फायदा उठाते हैं। यही 'बकरी ' नाटक की केंद्रिय व्यंजना है ।

'बकरी ' नाटक में प्रथमतः एक भूमिका-दृश्य आ जाता है । इस दृश्य में नट-नटी का आगमन मंच पर होता है । नाटक के पहले दृश्य में एक भिश्ती मशक लादकर सड़क सींचता हुआ गीत गा रहा है । मंच के कोने में तीन व्यक्ति डाकुओं के वेष में चुपचाप खड़े हैं । उन तीनों में एक दुर्जन सिंह है , जिसे आम जनता को लूटने की तरकीब सूझती है । उनके साथी कर्मवीर और सत्यवीर हैं । अपनी इस योजना में दुर्जन सिंह पुलिस सिपाही को शामिल कर लेता है ।

योजना के अनुसार सिपाही गाँव के एक गरीब औरत की बकरी चुराता है । दुर्जन अपने साथियों से कहता है कि यह बकरी गांधी जी की है । बकरी को देवी मानकर उसकी आरती उतारतें हैं-

"सोने की छत हो , चांदी के खम्भे
जय जगदम्बे जय जगदम्बे ।" [१]

विपती जब अपनी बकरी को ढूँढ़ती हुई ; उन लोगों के पास चली आती है ; तब सिपाही उसे धमकाता हुआ कहता है कि यह गांधी जी की बकरी है । तुम यहाँ से दफ़ा हो जाओ । इस बकरी को बिना खाना-पिना दिये कमजोर कर डालने की साजिश पर भारत सूरक्षा कानून के तहत विपती को जेल में बंद करने की बात सिपाही करता है । विपती बार-बार यह साबित करने का प्रयास करती है कि यह बकरी उसकी अपनी है । वह सिपाही को कहती है कि "आप बडे हैं हुजूर आपको हजार बकरी मिल जायेगी । हम गरीब का सहारा न छीनो ।" [२] इस पर सत्यवीर औरत को कहता है कि गरीबी के बारे में बकरी ने उसे बताया होगा । गरीबी केवल मन की होती है । गरीबी विचारों की होती है और वह दृष्टि की भी होती है ।

दुर्जन सिंह , सत्यवीर और कर्मवीर आदि तीनों समकालीन राजनेताओं के प्रतीक हैं । ये तीनों आम जनता को गुमराह करके बकरी पर सोना , चांदी , पैसा चढ़ाने के लिए कहते हैं । ऐसा करने से गाँव में पडा हुआ सुखा या अकाल समाप्त होकर खेत लहलहाने लगेंगे , पानी जमीन फोडकर बाहर निकलेगा और आपकी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जायेगी । वे लोगों में अंधश्रद्धा फैलाने की कोशिश करते हैं । अगर यह बकरी इस औरत के पास रह गयी तो कुँआ भी सुख जायेगा , आग बरसेगी और इसके जिम्मेदार आप गाँव वाले होंगे । इस बात पर लोग विपती को बकरी न देकर सेवाग्राम में रखने का निर्णय लेते हैं । विपती को सार्वजनिक संपत्ति हड़प करने के आरोप में दफा 'एक्स क्यु जीरों ' के अधीन दो साल सख्त कैद की सजा देकर जेल में बंद कर देते हैं । यह स्वार्थी राजनेता अपने स्वार्थ एवं कल्याण के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना करते हैं - जैसे ' बकरी शांति प्रतिष्ठान' , ' बकरी सेवा संघ ' , ' बकरी संस्था ' ,

' बकरी मंडल ' आदि ।

एक युवक इन राजनेताओं को अच्छी तरह से जानता है । वह ग्रामीण लोगों के मन में स्वतंत्रता की चेतना जगाकर राजनेताओं की छिछली राजनीति का पर्दाफाश करता है ।ग्रामीण लोगों को समझाते हुए वह कहता है " आज बकरी गांधीजी की हुयी , कल गाय कृष्ण जी की हो जायेगी , बैल बलराम जी के हो जायेंगे । यह सब ठग है ठग । बकरी बकरी है देवी नहीं । आसरम जाल है , ई सब चोर है , डाकू ।"[3]

कर्मवीर बकरी के थन को चुनाव चिह्न के रुप में लेकर चुनाव लड़ता है । तब युवक को इसका विरोध करना पड़ता है । कर्मवीर युवक को अपने पक्ष में वोट डालने के लिए धमकाता है।युवक के न मानने पर उसे वोट की तोड़-फोड़ करने के आरोप में जेल बंद किया जाता है । ग्रामीण लोगों को डरा-धमकाकर, बकरी का डर दिखाकर उनके वोट पाकर कर्मवीर चुनाव जीत जाता है । जीतने की खुशी में महाभोज का आयोजन करते हैं । युवक भोज के समय ही विपती और गाँव वालों को साथ ले जाता है । यहाँ दुर्जन सिंह , सत्यवीर और कर्मवीर तीनों को रंगेहाथ पकड लेते हैं । यहीं पर ' बकरी ' नाटक की कथावस्तु समाप्त हो जाती है ।

नाटक दृश्य काव्य है ।इसमें अभिनय और कथावस्तु का गहरा संबंध स्थापित किया है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर रहे हैं । ' बकरी ' नाटक की कथावस्तु ' भूमिका दृश्य ' से शुरु हो जाती है । प्रारंभ में कार्य की रुपरेखा का संकेत प्राप्त होता है । क्रिया-व्यापार को विकसित करने के लिए नाटककार ने संघर्षमय घटना की योजना की है । यहाँ पाठक या दर्शक को नाटक की प्रवृत्ति , समय , घटना-स्थल आदि का परिचय प्राप्त होता है । नाटक के प्रथम अंक के पहले दृश्य से कार्य-व्यापार का विकास प्रारंभ हो जाता है । नाटककार पाठक या दर्शक की जिज्ञासा बढाने में सफल हो चुके हैं । दूसरे अंक के पहले दृश्य में कथावस्तु चरम सीमा प्राप्त करती है । उसके उपरान्त कहानी निर्णायक मोड़ लेती है और उस वक्त कथावस्तु निगति में प्रवेश करती है । नाटक में सत्-असत दो शक्तियाँ होती हैं । वह शक्तियाँ ही जय-पराजय का

निर्णय करती है । असत् पर विजय पाने के उद्देश्य से कथावस्तु के अंत में युवक , विपती तथा ग्रामीण लोग , दुर्जन और उनके गिरोह को रस्सी से बाँध देते हैं ।

नाटक की अनेक घटनाएँ एवं दृश्य रंगमंच पर बड़ी सहजता के साथ प्रस्तुत किये जा सकते है। कथानक अभिनय को बढ़ावा देता हुआ आगे बढ़ता है । अतः कहा जा सकता है कि लेखक ने नाटक की कथावस्तु को अभिनय की दृष्टि से योग्य बनाया है ।

लडाई

' लडाई ' नाटक की शुरुआत भूमिका दृश्य से होती है । इस दृश्य में उद्घोषक ने आजादी के बाद की परिस्थिति का वर्णन किया है । जीवन के हर क्षेत्र में लडाई जारी है । अखबार बेचने वाले कुछ लड़के समाचार पत्रों की सूर्खियों पर प्रकाश डालते हैं । उद्घोषक वर्तमान स्थिति के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरणा देता है । इस दृश्य में गायक इकतारे पर गीत गा रहा है ।

नाटक में कुल चौदह दृश्य हैं । पूरा नाटक इन्हीं में विभाजित हुआ है । प्रथम दृश्य में सत्यव्रत समाचार पढते-पढते अखबार जलाता है ; अब सत्य के लिए लड़ने की प्रतिज्ञा करता है । पत्नी के पूछे जाने पर सत्यव्रत उससे कहता है कि "लडाई शुरु हो गई अब मैं सत्य के लिए लडूँगा । न खूद कोई गलत काम करुँगा , न दूसरे को करने दूँगा ।"[४] सत्यव्रत की पत्नी उसे समझाने का प्रयास करती है कि लोग उसे पागल कहेंगे । सत्यव्रत पागल होना बेहतर समझता है । वह कायर और ढोंगियों से नफरत करता है । अखबार उन सभी की वकालत करते हैं । वह झुठे , बिके हुए अखबार वालों से निपटने की सोच रहा है । उसके सामने पत्नी मुसीबत भरी जिंदगी का बखान करती है । सत्यव्रत की इस लडाई में उनका साथ देने से पत्नी इन्कार कर देती है । सत्यव्रत को बच्चों की फीस , महिने भर का राशन , दूध और रोटीवाला इन सभी के व्यवहार असत्य लगते हैं । वह अपने बच्चों को स्कूल में नहीं पढाना चाहता । उसकी दृष्टि से सभी स्कूल गंदे हैं , जहाँ भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार फैला हुआ है । वह चाय पीना और डबल रोटी खाना भी गलत समझता है ।

दूसरे दृश्य में सत्यव्रत गुस्से से घर के बाहर निकलता है । सड़क पर सवार एक रोटीवाले से टकरा जाता है । रोटीवाला झगडा करने पर उतारु हो जाता है । सत्यव्रत उस रोटीवाले को बेईमान कहता है , जिससे उसको मार खानी पडती है । राह चलते लोग भी उसका साथ छोड़ देते हैं । इस दृश्य के अंत में पार्श्व से गायक गीत रहा है -

" गलत को गलत कहने में भी
दुनिया यहाँ रोकती है ,
दुर्बल होकर सच्ची बात
कहे तो तुम्हें टोकती है ।
आगे चले सत्यव्रत तो वह
जा पहुँचे स्कूल में
सोचा सभी बुराई की जड
है शिक्षा के मूल में । " [५]

तीसरे दृश्य में सत्यव्रत प्रिंसिपल से मिलता है । उसके बच्चे की किताबें चोरी हो गई हैं । इस बात की शिकायत अंग्रेजी भाषा में न होने के कारण शिकायत अस्वीकार की जाती है । अपनी भाषा में बात कहने से डिसिप्लिन बिगड़ती है । ऐसा प्रिसिंपल का मानना है । सत्यव्रत इस प्रवृत्ति का विरोध करता है । वह प्रिंसिपल से कहता है कि आप लोग शिक्षा के नाम पर नई पीढ़ी को नपुंसक बना रहे हैं । पैसे वाले लोगों के बच्चों को आप ऊपर उठाना चाहते हैं । कम आमदनी वाले लोगों के बच्चों को हर तरह से दबाते हो । फलतः वे निराश होते हैं , घबराते हैं , बेचैन होते हैं और उनको अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगता है । अध्यापक उन पर अनुशासन हीनता , विद्रोह जाने क्या-क्या आरोप रखते हैं । सत्यव्रत बच्चों को विदेशी भाषा पढ़ना गुलामी समझता है ।

चौथा दृश्य बस में घटित हो जाता है । बस में एक आदमी कंडक्टर को टिकट के पैसे देता है । मगर वह यात्री बिना टिकट लिये चल पड़ता है । सत्यव्रत यह सब देखता है , तब

सत्यव्रत कंडक्टर को उस यात्री को टिकट न देने की बात उठाता है। सत्यव्रत कंडक्टर को चोर कहता है , तो कंडक्टर उसकी गरदन पकड़ता है। सत्यव्रत बस में उपस्थित इंसपेक्टर से शिकायत करता है। परंतु इसका परिणाम कुछ और हो जाता है। इंसपेक्टर भी कंडक्टर का साथ देता है। सरकारी कर्मचारियों के काम में बाधा डालना और उनसे लड़ना जुर्म होता है। ऐसी धमकी मिल जाने के बाद सत्यव्रत निराश हो जाता है। कंडक्टर उसे व्यंग्य से; शरीफ आदमी की तरह रहने की सलाह देता हुआ धक्का मारकर चला जाता है। उस वक्त बस में बैठे लोग हँस पड़ते हैं।

पाँचवाँ दृश्य राशन की दूकान पर घटित होता है। सत्यव्रत देखता है कि स्टूल पर बैठा चपरासी उँघ रहा है। भीतर गपशप हो रही है। एक घंटा भर बैठने के बाद भी चपरासी कायदे-कानून की बात करता है। वह सत्यव्रत को धीमी आवाज में बोलने के लिए कहता है। शोर-शराबा सुनकर अधिकारी बाहर आता है। सत्यव्रत का राशन कार्ड एक महिने से बंद पडा है। दफ्तर के लोग घूँस माँगते हैं। अधिकारी उसे शिकायत लिखकर शिकायत-पेटी में डालने की सूचना देता है। यहाँ चोरी , घूस , निकम्मेपन का दरबार लगा है। जहाँ भूखा और लाचार आदमी उससे नित टकराता है। अनाज दूसरे ले जाते हैं और वह कंकड खाता है। ऐसे अनेक विचार उनके मन में उमड़ने लगते हैं। सत्यव्रत शिकायत करता है , उसकी बात अनसुनी कर दी जाती है। सत्यव्रत कहता है " शिकायत पेटी यहाँ ताबूत है , जिसमें हर चीज़ जाकर दफनाने के लिए लाश में बदल जाती है। लेकिन मैं कुछ दफन नहीं होने दूँगा ।"[६] चपरासी सत्यव्रत को खींचता हुआ बाहर धकेल देता है।

छठे दृश्य में सत्यव्रत दैनिक ' सत्यपथ ' अखबार के दफ्तर में पहुँचता है।संपादक कुर्सी और मेज लगाए बैठे हैं। दोनों में बातचीत हो रही है। सत्यव्रत राशन अधिकारी के खिलाफ एक पत्र छपवाना चाहता है। संपादक और उस राशन अधिकारी के बीच मित्रता है। सत्यव्रत की चिठ्ठी छापने के लिए संपादक शर्त रखता है। वह सत्यव्रत से एक लेख लिखकर माँगता है। वह संपादक के प्रस्ताव को ठुकरा देता है। सत्यव्रत पत्रिका को बिकी हुई समझने

लगता है। संपादक महोदय कहते हैं कि " यहाँ बिका कौन नहीं है ? आप नहीं बिके हैं , सारा देश बिका है। बिकना ही यहाँ टिकना है।"[७] सत्यव्रत निकल जाता है। वह सोच रहा होगा कि लोग किसी ऐसी दौड में है , जहाँ झूठ का बोलबाला हो। झूठ को दौड़कर चलने की आदत होती है , क्योंकि उसमें धैर्य नहीं होता , वह जल्दी मंजिल पा लेना चाहता है।

सातवाँ दृश्य अस्पताल का है। फाटक के बाहर चारपाई पर रज़ाई ओढकर एक बीमार व्यक्ति लेटा है । उसके पास तीन ग्रामीण सिर झुकाये बैठे हैं। एक औरत घूँघट काढे सिसकियाँ भर रही है। यह घटना देखकर सत्यव्रत वास्तविक परिस्थिति से परिचित हो जाना चाहता है। अस्पताल जाकर डॉक्टर से उस मरीज संबंधी अधिक जानकारी माँगता है। सत्यव्रत किसी सेवा संस्था या किसी राजनीतिक पार्टी का आदमी नहीं इसकी पुष्टि होने के बाद डॉक्टर सत्यव्रत से अस्पताल में जगह न होने का कारण बताता है। वह अपनी मजबुरी जाहीर करता है। उसी समय डॉक्टर को एक टेलीफोन आ जाता है। डॉक्टर नर्स को सत्रह नंबर का बेड ठीक-ठाक करने की सूचना देता है , क्योंकि वहाँ मिनिस्टर का आदमी दाखिल होनेवाला है। सत्यव्रत इसका विरोध कर रहा है। लेकिन उसी समय बाहर ग्रामीण मरीज की मौत हो जाती है। पुलिस बेगुनाह सत्यव्रत को पकड़ कर थाने लेकर जाती है। उसके साथ मार-पीट की जाती है। दृश्य के अंत में पार्श्वगायक गीत गा रहा है -

" छोडा नहीं पुलिस ने उसको
बांध ले गई थाने पर
गर्व उसे था इक गरीब की
पीडा को अपनाने पर।
है आराम सभी फरमाते
दीन-हीन की लाशों पर ,
फिर भी आंच नहीं आती है
क्यों इनके विश्वासों पर ? "[८]

आठवाँ दृश्य थाने का है। सिपाही सत्यव्रत को लेकर आते हैं। सत्यव्रत दरोगा के पास सत्य की रक्षा करने की माँग करता है । दरोगा सत्यव्रत को ही समझाता है कि सत्य की रक्षा करना उनका काम नहीं। शांति और व्यवस्था की रक्षा करना उनका काम है। वह अपनी रक्षा करने में खुद ही समर्थ है। सत्यव्रत अपने आपको गैर कानूनी ढ़ंग से कैदी बनाकर लाये जाने की जानकारी दरोगा से देना चाहता है। सिपाही उसे बदमाश मानते हैं। दरोगा के आदेश के अनुसार सिपाही सत्यव्रत को पीटता हुआ बाहर ले जाते हैं।

नौवां दृश्य कुछ इसप्रकार हैं - सत्यव्रत घायल अवस्था में सड़क पर बेहोश पडा है। एक बदमाश के साथ सत्यव्रत की मुलाकात होती है। कुछ पूछताछ के बाद पता चलता है कि वह अफीम का थैला लेकर आया है। वह सत्यव्रत के साथ सौदा करना चाहता है।मगर सत्यव्रत तस्करी करने का प्रस्ताव साफ ठुकरा देता है। वह बदमाश उसे जोर से धक्का मारता है और वहाँ से चला जाता है। उसके बाद भिखारी आ जाता है। वह सत्यव्रत को वहाँ से हटाना चाहता है। अन्य दो-तीन भिखारी उसमें आकर मिल जाते हैं। एक सेठ वहाँ अपने नौकर के साथ पहुँचता है।सेठ भिखारियों में रोटियाँ बाँट रहा है , लेकिन आपसी झपट में रोटियाँ गिर जाती हैं। सत्यव्रत उन सभी भिखारियों को रोटी खाने से मना करता है , मगर वे भिखारी सत्यव्रत की बात मानते नहीं। उसके बाद वहाँ पर एक चाटवाला सिर पर खोमचा रखें आ जाता है। सत्यव्रत उसे सामान ढँकने की हिदायत देता है। चाटवाला चला जाता है और उसके बाद एक लडका भागता हुआ आता है और सत्यव्रत को धक्का देता है। सत्यव्रत लड़खड़ा जाता है। वह छोटा-सा लडका सत्यव्रत की जेब काटता है।

दसवें दृश्य में सत्यव्रत बस स्टैंड पर बैठा है। चार लडके बस के इंतजार में खड़े हैं। परीक्षा के प्रश्नपत्र में नकल करने के बारे में लडकों की आपस में चर्चा हो रही है। लड़के परीक्षा का बहिष्कार , हड़ताल करने की सोच रहे हैं। सत्यव्रत इसे झुठलाता है । लडकियों के आने पर लडके उन्हीं की बातें करने लगते हैं। लडकियों को छेड़ते हैं। सत्यव्रत उनको ऐसा करने से

मना कर रहा है और पूछता कि स्कूल-कॉलेज में किस-तरह की पढ़ाई करते हो । लडके-लडकियाँ सत्यव्रत का मजाक उड़ाते हैं ।

ग्यारहवें दृश्य में सत्यव्रत सड़क पर थका , हारा , निढ़ाल खड़ा है । उसके सामने बुद्धिजीवी आता है । सत्यव्रत बुद्धिजीवी को समझाता है , दूसरों को मात्र उपदेश देने से कुछ नहीं होता पहले हमें स्वयं बदलना चाहिए । बुद्धिजीवी लोगों को सड़क पर खड़े रहना चाहिए वे यही खडे रहकर कुछ कर सकेंगे । ऐसे लोग सड़क किनारे खड़े रहते हैं , तो बहुत कुछ कर सकते हैं । बुद्धिजीवी साम्प्रदायिक दंगो पर विचार करने के लिए एक बैठक में जा रहा है । सत्यव्रत उसे ढ़ोंगी कहता है । ऐसे लोग निकम्में और घटिया होते हैं । बुद्धिजीवी और सत्यव्रत के बीच अनेक बातों को लेकर नोक-झोंक होती है । एक गरीब आदमी चंदा माँगता हुआ सत्यव्रत के पास आ जाता है । सत्यव्रत चंदा तो देता नहीं , लेकिन उस व्यक्ति के साथ आश्रम की ओर निकलता है ।

बारहवाँ दृश्य परलोक आश्रम का है । स्वामी महेश्वरानंद अपनी गद्दी पर बैठे हैं और सामने यज्ञ का आयोजन किया है । सत्यव्रत दुखी होने की जानकारी देता है । स्वामी सत्यव्रत को मन को शांत रखने की सीख देते हैं । सत्यव्रत आश्रम में होने वाले धन के दुरुपयोग से चिंतित है । यह लोग जितना घी और अन्न जला देते हैं , उनमें स्कूल और अस्पताल खुल सकते हैं । सत्यव्रत धर्म को स्वार्थी कहता है । धर्म संबंधी उनके विचार हैं - " जो धर्म शंका को अनुमति नहीं देता , वह धर्म नहीं है । तुम आदमी को विवेक शुन्य बेजबान बनाकर अपने गढ़े साँचे में ढ़ालना चाहते हैं । अब धर्म के नाम पर ऐसी तानाशाही नहीं चलेगी । दूसरों के खून-पसीने की कमाई पर मौज उडाना असली पाप है । वास्तव में पापी तुम हो । "[९]

तेरहवां दृश्य पार्क में घटित हुआ है । सत्यव्रत थक चुका है , बौखार में तपा है । इसीलिए आँख बंद किए पड़ा है । उस समय हाथ में छुरा लिए एक आदमी वहाँ आता है और दूसरे आदमी को मार देता है । पुलिस वहाँ पर पहुँचती है । खुनी व्यक्ति को पकड़ने के बजाय सत्यव्रत को पकड़ती है । सत्यव्रतपर आरोप लगाया जाता है कि वह उसी मारने वाले व्यक्ति के

गिरोह का आदमी है । बेहोश अवस्था में सत्यव्रत को थाने ले जाया जाता है । उनके अंगूठे के निशान लगवाते हैं । इस तरह सत्यव्रत सत्य के लिए लड़ते-लड़ते अधमरा हो जाता है ।

चौदहवां और अन्तिम दृश्य अस्पताल में है । सत्यव्रत बिस्तर पर पडा है और उसकी पत्नी उसके पास खडी है । वह पत्नी से कुछ कहना चाहता है , मगर बेहोश हो जाता है । डॉक्टर उसकी पत्नी को बताते है कि सत्यव्रत की दिमागी हालत अच्छी नहीं । उसे भविष्य में तणाव की स्थिति से बचना होगा । होश आने के बाद सत्यव्रत डॉक्टर से झगड़ा करता है । उसे अकेला छोड़ दिया जाता है । वह चिल्लाकर बता रहा है कि वह स्वस्थ एवं ठीक है । नाटक के अन्त में उद्घोषकों की आवाज अलग-अलग घोषणाओं के साथ सुनाई देती है । गायक के गीत के साथ ही नाटक समाप्त हो जाता है ।

' लडाई ' नाटक की कथावस्तु में नाटककार ने तत्कालीन परिस्थिति के जीवंत दर्शन अभिनय द्वारा दर्शकों के सामने प्रस्तुत किये हैं। नाटक में भूमिका दृश्य है । इस दृश्य योजना से अपेक्षित वातावरण का निर्माण करने की कोशिश की गई है । नाटककार ने ऐसी शब्द-योजना की है , जहाँ पर दर्शक नाटक की आत्मा का संकेत प्राप्त कर सकते हैं । यहीं पर प्रारंभिक घटना का सूत्रपात्र हुआ है । लडाई नाटक के पहले दृश्य से कार्य व्यापार या संघर्ष बीजारोपण होता है । इस संघर्ष के साथ कथा का उदय हुआ है । नाटक की कथावस्तु चौदह दृश्यों में विभाजित है । प्रत्येक दृश्य अलग-अलग स्थान पर घटित हुआ है । इसलिए अभिनय में बिखराव पैदा हो गया । कथानक में बिखराव होने के बावजूद भी दर्शक एवं पाठक में उत्सुकता बनी रहती है । प्रत्येक दृश्य में रोचकता भरी है । नाटक के बाहरवें दृश्य में कथावस्तु चरम सीमा पर पहुँचती है । उसके बाद कथानक उतार की ओर मोड़ लेता है । सत्यव्रत अस्पताल में दम तोड देता है और कथावस्तु का अंत हो जाता है । ' लडाई ' नाटक की कथावस्तु में मानसिक , वैचारिक , सैद्धान्तिक संघर्ष पाया जाता है । इसलिए नाटक में अभिनय अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है ।

अब गरीबी हटाओ

'अब गरीबी हटाओ ' नाटक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का तीसरा नाटक है । इसका प्रकाशन वर्ष सन् १९८१ ई. है । इस नाटक की कथावस्तु देश में व्याप्त गरीबी की समस्या पर आधारित है । सर्वेश्वर गरीबी को अनादिकाल के परम्परित रुप से ही स्वीकार करते हैं और यह मानते है कि गरीबी के खिलाफ सदैव गरीब को ही लड़ना पड़ता है । आज भी गरीब को उबरने के लिए स्वयं को ही कमर कसना होगा । इस नाटक की भूमिका में सक्सेना ने इस व्यापक दृष्टिकोण से देखा है । अब गरीबी हटाआ कोई नारा नहीं है ,न यह शीर्षक किसी नारे से जुड़ा है । इसका संदर्भ व्यापक एवं मानवीय नियति से है और उसी संदर्भ में इसे ग्रहण किया जाना चाहिए । यह नाटक व्यवस्था का विरोधी नाटक नहीं है बल्कि जो सदियों से आज तक अपमान और शोषण का शिकार बने हैं, उनका प्रतिनिधित्व करता है ।

सर्वेश्वर इस नाटक को गाँव तक पहुँचाना चाहते हैं । साहित्य के समाजीकरण का यह उद्देश्य निश्चय ही उन्हें लोकधर्मी बनाता है । प्रत्येक दृश्य नट-नटी के संवाद से शुरु होता है । जिसके माध्यम से वस्तु का परिवेश दर्शकों के सामने स्पष्ट कर दिया जाता है ।

पहले दृश्य में नट विदूषक की तरह एक डंडा टांगो के बीच दबाये नाच-गा रहा है । नटी-नटी के व्यवहार से नाराज है । आज के नेता विदूषक हैं , सभी डंड़े के घोडे पर चले जा रहे हैं। नट-नटी 'डंडे का घोडा ' नामक नाटक खेल रहे हैं । दोनों गणेश जी को वंदन करते हैं। अचानक खद्दर की टोपी लगाए एक नेता आ जाता है । नेताजी और नट दोनों में बातचीत होती है । नट उसे मंच पर आने का कारण पूछता है । नेताजी उसका उत्तर देता है कि नेता लोग कभी भी कहीं भी आ जा सकते हैं । वह नेता अपने आपको नाटक का सूत्रधार घोषित करता है । प्रत्येक नाट्य मंडली का सूत्रधार नेता ही होता है । अब इस बार भी यह तय है कि 'सत्य मंडल ' नाटक कंपनी का सूत्रधार भी वही राजनेता ही होगा । नेताजी नाट्य कर्मियों को 'गरीबी हटाओ ' शीर्षक वाले नाटक का मंचन करने का आदेश देता है ।

SHIVA LIBRARY

नेता अभिनय जानता नहीं , गाना-नाचना तो उसके लिए दूर की बात है । लेकिन वह जनता को नचाना अच्छी तरह जानता है । गाँव में सांस्कृतिक महोत्सव है । उस महोत्सव का उद्घाटन मुख्यमंत्री जी करने वाले हैं । उत्सव में नाटक का खेला जाना है । पुलिस का इंतजाम रखा गया है । सांस्कृतिक उत्सव , नाटक में पुलिस का आना मतलब मंत्री का आना तय है । ऐसा नट का मानना है । नटी कुछ भी करना लफड़ा समझती है । नट दर्शकों से क्षमा याचना करता है, क्योंकि उन्होंने भोगा हुआ सूत्रधार और नेताजी का हुक्म दिया हुआ नाटक कहीं एक-दूसरे से गड्ड-मड्ड हो जाना स्वाभाविक समझता है ।

दूसरा दृश्य नट-नटी के गीत और नृत्य से आरंभ हो जाता है । सांस्कृतिक महोत्सव की तैयारी हो रही है । रंगमंच पर झंडा लाकर लगा दिया जाता है । मुख्यमंत्री , कृषिमंत्री के साथ-साथ पीछे से संतरी और दरोगा बंदूक लेकर आते हैं । मुख्यमंत्री गाँव का नाम पूछते हैं , तो दरोगा 'गरीबन का पुरवा ' ऐसा बताता है । इस गाँव में सत्तर प्रतिशत हरिजन हैं , बाकी जाट-ब्राह्मण करीब-करीब बराबर हैं । मुख्यमंत्री हरिजनों का समर्थन चाहते हैं । गाँव के सरपंच वहाँ पर उपस्थित हैं । गाँव में पीने के पानी की समस्या है । हरिजनों के लिए छोटा-सा ताल है । कुछ हरिजन दूसरे गाँव से भी पानी ले आते हैं । समारोह में कव्वाली गायन का कार्यक्रम रखा है । कव्वालों और ग्रामीण लोग मंच पर आसन ग्रहण करते हैं । इन सभी लोगों के साथ नट भी आकर बैठ जाता है । महफिल अच्छी तरह जम जाती है । मुख्यमंत्री अपने भाषण में कहते हैं - " आपकी गरीबी हमसे छुपी नहीं । हमारा देश गरीब है , गरीबी हटाना हमारा पहला काम है , हमारी प्राथमिकता है । हम सबको मिलकर गरीबी को हटाना चाहिए । आप पुछेंगे गरीबी कैसे हटेगी ? गरीबी हटती है मेहनत करके , उद्योग-धंधों को बढ़ावा देकर । हम गरीबी हटाने के लिए एक अलग मंत्रालय ही बना रहे हैं ' गरीबी हटाओ मंत्रालय ' ।" [१०] कार्यक्रम के समय ही कुछ आदमी एक औरत को पकड़ कर ले आते हैं । वह औरत अपने बच्चों सहित कुए में कुद कर जान दे रही थी । उस औरत के पति जेल की सजा काट रहा है । कोई उसे काम

नहीं देता दरोगा के इशारे पर संतरी औरत को पकड लेता है । आत्महत्या और हत्या करने की कोशिश पर कानूनी कार्रवाई की जायेगी मंत्री औरत से हमदर्दी जताते हैं ।

तीसरे दृश्य में मुख्यमंत्री और कृषिमंत्री क्रमशः मुकुट और पगड़ी बाँधकर राजा और मंत्री बन गये हैं । सेनापति तलवार हाथ में लिए रक्षा कर रहा है । राजा सिंहासन पर बैठ जाता है । ऐसे विलासपूर्ण वातावरण में सिपाही हाथ में लेकर औरत और आदमी को बाँधकर राजा के सामने प्रस्तुत करता है । बंदी बनाये गये दोनों भी कलाकार हैं । उनको नाच-गाने के लिए बुलाया है । औरत नाच और गा रही है , तो पुरुष ढोल बजाकर उसका साथ दे रहा है । राजा औरत को महल में रहने का आदेश देता है । राजा खुश हो जाता है । औरत गाँव का दुःख राजा के सामने बखान करती है । गाँव गरीब है , लोग एक वक्त का ही खाना खाते हैं । खेत से सारा अन्न राजा के सिपाही ले जाते हैं । गाँव में कुँआ तक नहीं है । लोग प्यासे रहते हैं । राजा को औरत का सौंदर्य पसंद आता है । इसीलिए राजा उनकी सभी माँगे पूर्ण करने का आश्वासन देता है । आदमी राजा के सामने अपने हक की बात करने लगता है । तब उसे राजा के आदेश पर सैनिक उसे पकड़कर बंदी बनाते हैं । राजा उस औरत के प्रति लोलुपता का प्रदर्शन करता है ।

चौथा दृश्य हवालत में घटित है । गिरफ्तार औरत से दरोगा पूछताछ कर रहा है । औरत को अपने बच्चों की रोटी की चिंता सता रही है । उतने में वहाँ दरोगा आ जाता है । वह औरत को लंपड निगाहों से निहार रहा है । वह औरत को उसके बच्चों संबंधी गलत जानकारी देकर औरत को फूसला रहा है । उसके लड़के को सिपाही और लडकी को पढ़ा लिखाकर स्कूल में दाई बनाने का आश्वासन देता है । वह उसे लोलुप आँखों से देखता हुआ अधिक पास खिंचता है । सरपंच शराब पीकर आया है । सरपंच दरोगा का साथ देता और दरोगा , सरपंच मिलकर औरत पर बलात्कार करते हैं ।

पाँचवाँ दृश्य राजा के अंतःपुर का है । शय्या बिछी हुई है । फूलमालाओं की झालर बनाई है । उसके अंदर 'गरीबन' नामक सुंदर औरत फुलमालाओं की शय्यापर बैठी है । वहाँ

राजा आता है , तब वह औरत राजा के पैर पकड़ने लगती है । वह गाँव जाना चाहती है । उसे सोने -चांदी की जरुरत नहीं है । वह पेट के लिए रोटी माँग रही है । राजा की रानी बनकर नहीं रहना चाहती । वह अपने होने वाले मरद को जेल से छुडाने की बिनती करती है । इसके बदले वह राजा की रानी बनने के लिए तैयार होती है । राजा औरत को खूश करने के वास्ते उसका घर महल की तरह बनवाने , माँ-बाप को जागीर देने, गाँव वालों को मालामाल करने , औरत के होने वाले मरद को सेना में रखने जैसे अनेक वायदे करता है । राजा औरत का 'गरीबन' यह नाम बदल देता है । अब वह गौरी बानू बन चुकी है । राजा उसे अपने जाल में पूरी तरह फँसा लेता है । वह औरत मजबुर होकर सब सह लेती है । राजा के कक्ष में नाचती है तथा राजा का मनोरंजन करती है ।

छठा दृश्य कारागार के बाहर का है । एक प्रहरी के साथ राजा की रानी का मरद(गायक) प्रहरी बनकर हाथ में भाला लिए पहरे पर तैनात है । वह उदास रहता है , क्योंकि उसको आजादी माँगने पर मिली है । प्रहरी उसे अपने जीवन की करुण कहानी सुनाता है । उसके बाप ने लगान नहीं दिया इसीलिए उसे मार ड़ाल दिया गया है । अब वह प्रहरी बना है । उसकी जमीन राजा ने हडप कर ली है । प्रहरी विद्रोह करना चाहता है । गायक को सैनिक बनना पसंद नहीं । वह अपना घर बसाना चाहता है प्रहरी गायक से कहता है " कहते जाओ । मुझे अब सुनना अच्छा लगता है-घर , औरत , बच्चे , सुख , शांति । (सोचता है) यहाँ दस घंटे पहरा देते हैं । राजा की लडी लडाइयों में जाते हैं । खाने की तरह औरत खाते हैं , फिर खडे हो जाते है राजा के लिए लूटने । "[११] आदमी राजा को जान से मारने की सोचता है । प्रहरी उसे समझाता है कि दीवारों के कान होते हैं । दोनों एक गीत गाते हैं -

" हम अपने राजा को प्यार करेंगे
खुदा बचाए उसको ।
उसके लिए हम जान देंगे
जैसा कहेगा वैसा करेंगे ।

खुदा बचाए उसको

हम अपने राजा को प्यार करेंगे

दुश्मन आए वार करेंगे

और न अब इंतजार करेंगे

खुदा बचाए उसको

आए , खुदा बचाए उसको

आए , आए , खुदा बचाए उसको ।"[१२]

सातवें दृश्य के अंतर्गत गाँव की एक झोपड़ी है । आधी रात को चादर ओढ़े जेल से भागा हुआ एक कैदी वहाँ आया है । वह व्यक्ति हत्या के आरोप में कैद औरत का पति है । सांकल खटखटाने पर एक ग्रामीण बाहर आ जाता है । वह अपनी औरत और बच्चों के बारे में उस ग्रामीण से बातचीत करता है । वह जेल से भागकर इसलिए आया है कि जो अपराध उसने किया ही नहीं, फिर भी जिसकी वह सजा काट रहा है ; उसी को वह वास्तव में पूरा करना चाहता है । ग्रामीण उसके कैद हो जाने के बाद का दयनीय कथन करता है । उनके बच्चें सरपंच की गाय चराते थे । सरपंच ने उनके बच्चों को शहर में बेच दिया । जेल में इज्जत लुटी जाने से औरत पागल हो गई । आदमी सरपंच को मारना चाहता है , मगर ग्रामीण उसे ऐसा करने से रोकता है । ग्रामीण उसे कहता है " उसे तू अकेला नहीं मार पायेगा । उसकी बोटी-बोटी काट डाल , फिर भी जिंदा रहेगा । इसके बाप का कतल हुआ था । मेरे दादा ने किया था। फांसी हुई । पर वह मरा नहीं , अपने बच्चों में जिंदा है । एक साँप मारने से क्या होगा ? जिसका खानदान तो रहेगा ।"[१३] ग्रामीण व्यक्ति उस आदमी को हौसला रखने , उसे पस्त न होने देने की सलाह देता है । सब इकठ्ठा होकर साथ लड़ने तथा अपना सरपंच खुद चुनने की बात बताता है। आग से लडना लडाई है धुंए से नहीं । नेता सूत्रधार से नाटक को बंद करवाता है । वह नट-नटी दोनों को धमकाता है । अंत में समवेत गान के साथ ही पर्दा गिर जाता है ।

'अब गरीबी हटाओ ' नाटक की कथावस्तु में अभिनय का संपूर्ण ध्यान रखा गया है । अभिनय से युक्त कथावस्तु का सही क्रम में विकास हो पाया है । कथावस्तु सात दृश्यों में विभाजित की गयी हैं । नाटक के पहले दृश्य में संघर्षमय घटना की योजना की है । इस दृश्य में नट-नटी के साथ नेताजी का संघर्ष दिखाया है । प्रथम दृश्य में क्रिया-व्यापार की गति को सही दिशा दी है । संघर्ष के साथ ही कथानक का उदय हो गया है । नाटककार पाठक या प्रेक्षक की जिज्ञासा को तीव्रतर बनाता हुआ कथा को क्रमशः चरम सीमा की ओर उन्मुख करता है । कथानक स्वाभाविक गति से आगे बढता है ।नाटक की कथावस्तु चौथे दृश्य में चरम सीमा प्राप्त करती है । चरम सीमा कथावस्तु को निर्णायक क्षण प्रदान करती है। नाटक में दो शक्तियाँ निरंतर साथ चलती है।औरत के प्रति प्रेक्षकों की सहानुभूति दिखाई देती है ।उसके बाद कथावस्तु में उतार नजर आने लगता है। नाटक में सामाजिक दर्शक की जिज्ञासा का शमन नहीं होता,बल्कि अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है। अंतिम दृश्य में दर्शक को नाटक की चरम परिणति स्पष्ट हो जाती है ।

नाटक के प्रत्येक दृश्य अभिनय पूर्ण है । प्रथम दृश्य में नट-नटी का अभिनय सुंदर बन पड़ा है। कथानक के तीसरे और चौथे दृश्य की घटनाएँ अभिनय की दृष्टि से सक्षम है । छठे दृश्य में अभिनय थोडासा शिथिल बन पडा है ।लेकिन अंतिम दृश्य अभिनय युक्त होने के कारण शिथिलता का ऐहसास नहीं होता ।इस तरह सर्वेश्वर ने इस नाटक में अपनी अभिनय कला का कुशलता के साथ परिचय दिया है ।

निष्कर्ष

सारांश में; सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने अभिनय का बड़ा गहरा ध्यान रखा है । कथावस्तु और अभिनय का गहरा संबंध होता है । इसीलिए इन दोनों को समकक्ष रखा गया है। सक्सेना के नाटकों की कथावस्तु में विविधता दिखाई देती है । नाटकों की कथावस्तु का आकार एक जैसा नहीं है । सक्सेना ने ' बकरी ' नाटक की कथावस्तु का विभाजन अंक के साथ दृश्यों में भी किया हैं। 'लडाई' , 'अब गरीबी हटाओ ' इन दो नाटकों का आकार संक्षिप्त

है। सक्सेना ने अपने नाटकों में अंक और दृश्य का सही क्रम रखा है। इसीलिए कथावस्तु एक संध दिखाई देती है। कथानक में कार्य-व्यापार का प्रवाह अबाध गति से शुरु से अंत तक अखंडित बहता रहता है। सक्सेना के नाटकों की कथावस्तु कठिन नहीं है। उसमें जटिलता नहीं है। नाटक के प्रत्येक अंग की अभिव्यक्ति कथानक में होती है। कथावस्तु के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वर के नाटक लोकप्रिय , प्रभावक्षम , मौलिक और विसंगति का विरोध करने वाले हैं। अतः कथावस्तु का आकार , अंक और दृश्यों का क्रम , क्रिया-व्यापार , सात्विक भावों का प्रदर्शन आदि कथानक के अभिनेयता की दृष्टि से अंत्यत उचित मालूम पडते हैं।

(आ) पात्र योजना

पात्र शब्द का अर्थ है 'वर्तन'। जिस प्रकार वर्तन में रखकर किसी को कोई वस्तु प्रदान की जाती है , उसी प्रकार नाट्य या अभिनेय वस्तु भी किसी पात्र के आधार से ही प्रदान की जा सकती है।

नाटक में जितने पात्र हैं , उसमें स्त्री और पुरुष पात्रों के साथ-साथ अन्य पात्रों पर भी विचार किया जाता है। पात्रों की योजना इसप्रकार होती है कि वह अपनी प्रतिभा , कला-कौशल , भाव-भंगिमाओं को स्वाभाविक रुप से प्रकट कर सकें। नाटक में पात्रों की भीड़ होने से रंगमंच पर अभिनय सुविधाजनक नहीं हो जाता। नाटक में पात्र स्वाभाविक और उचित होते हैं। पात्रों की संख्या और पात्रों की योजना तथा कल्पना पर नियंत्रण रखना किसी भी सिद्धहस्त कृतिकार अथवा नाटककार का आवश्यक गुण माना जाता है।

अभिनेता का कर्तव्य होता है कि वह पात्र की भूमिका को प्रस्तुत करने से पहले उस पात्र को ठीक से पढ़कर, चिंतन-मनन करें और उसमें उतरने की पूरी कोशिश करें। किसी पात्र का चरित्र स्पष्ट हो , तो पात्र में उतरने तथा अभिनय करने के लिए वह को आसान होता है और संबंधित पात्र अभिनीत करने में अभिनेता पूर्ण रुप से सफल हो जाता है। पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालने से पता चलता है कि उस पात्र में अभिनेयता संबंधी कौन-सी

विशेषताएँ मौजुद हैं। इसीलिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों के पात्रों की चारित्रिक प्रकृति को देखना आवश्यक है ।

१.बकरी

सक्सेना जी के 'बकरी ' नाटक में कुल मिलाकर १३ पात्र हैं। इन पात्रों में ११ पुरुष पात्र और २ स्त्री पात्र हैं । युवक नाटक का केंद्रिय पात्र है । विपती नाटक का सबसे सशक्त पात्र है । बकरी नाटक में मुख्य पात्रों के साथ-साथ गौण पात्र भी दिखाई देते हैं । गौण पात्रों में भिश्ती , ग्रामीण एक , ग्रामीण दूसरा , ग्रामीण तीसरा , ग्रामीण चौथा आदि हैं। नाटक के प्रमुख पात्रों का परिचय इसप्रकार है-

१.नट :-

नट बकरी नाटक के रंगमंच पर प्रथम अभिनय करता है।अपनी अभिनय कला का परिचय देता है । नट एक विद्रोही पात्र है ।वह अपने गीतों के माध्यम से राजनीति पर व्यंग्य करता है । आम जनता के हालात देखकर वह भावविभोर हो जाता है । नट शहर से गाँव की ओर जाना चाहता है । इनका अंगिक, वाचिक और सात्विक अभिनय दर्शकों पर प्रभाव छोड़ जाता है ।

२.नटी :-

नटी बकरी नाटक का पहला स्त्री पात्र है । नटी नट के साथ सहयोगी कलाकार बनकर मंच पर उपस्थित होती है । नाटक के भूमिका-दृश्य में नट के साथ वह मंगलाचरण करती है । प्रत्येक दृश्य के अन्त में नृत्य और गायन करती है । उनके नृत्य और गायन से ही अभिनय के दर्शन होते हैं । नटी अंगिक अभिनय में पारंगत है ।

३.दुर्जन सिंह :-

दुर्जनसिंह बकरी नाटक का खलनायक है । वह अपने भुतपूर्व जिंदगी में लुट, डकैत करता है। लेकिन अब वह शरीफ़ आदमी का नकाब पहनकर घूमता है। किसी की बकरी

चुराकर उसको गांधी जी की बकरी बनाने की योजना दुर्जनसिंह की ही है।वह लोगों पर अन्याय अत्याचार करता है।उनके नेतृत्व में एक गिरोह बना है । अभिनय करने के लिए सशक्त पात्र है ।

४.कर्मवीर :-

कर्मवीर दुर्जनसिंह का सहयोगी मित्र है । कर्म से चोरी करनेवाला है । कर्मवीर वर्तमान राजनीतिक लोगों का प्रतीक बना है । स्वार्थी राजनेता के सभी गुण उसमें दिखाई देते हैं ।कर्मवीर चुनाव के मैदान में उतरता है और चुनाव जीत जाता है । राजनेता के रुप में ग्रामीण जनता से वोटों की भीख माँगता है । कर्मवीर आदर्श राजनेता का ढ़ोंग करता है।इनका अभिनय कसावदार है ।

५.सत्यवीर :-

सत्यवीर दुर्जनसिंह का दूसरा साथीदार मित्र है । उसके चरित्र में बौद्धिकता नजर आती है । वह अपनी बुद्धि का उपयोग दूसरों के हित के बजाय अहित में अधिक करता है । अपने विचारों से जनता को गुलाम बनाना चाहता है । नाटक में सत्यवीर ने विशेष भूमिका अदा की है। वह बुद्धिवादियों का प्रतीक बना है । ' बकरी संघ ' , ' बकरी स्मारक निधि ' जैसी संघटनाओं के निर्माण में सत्यवीर मदद करता है । वह 'बकरीवाद' विषय पर भाषण देने के लिए विदेश जाता है । इसका अभिनय वाचिक और सात्विक प्रकार का है ।

६.सिपाही :-

सिपाही मुख्य पात्रों में एक है । अपने कर्तव्य के प्रति लापरवाही बरतता है । अपने अधिकार का उपयोग गलत लोगों के लिए करता है । अपनी स्वार्थी वृत्ति के कारण पद, प्रतिष्ठा तक को भुल जाता है । सिपाही पूरे नाटक पर छाया हुआ है । सिपाही नोकर वर्ग का प्रतीक नजर आता है । वह कानून और अनुशासन की रक्षा करने के बजाय गरीब लोगों पर अन्याय अत्याचार करता है । सिपाही अंग संचालन के साथ-साथ बातचीत करके अंगिक और वाचिक अभिनय का परिचय देता है ।

७.विपती :-

विपती 'बकरी' नाटक का दूसरा और सबसे सशक्त स्त्री पात्र है। वह गरीब औरत है। नारी की वर्तमान परिस्थिति का सजीव दर्शन करती है। विपती का व्यक्तित्व लाचार प्रतीत होता है। विपती का स्वभाव दृढ़ निश्चयी है। उनका व्यक्तित्व आकर्षित है। नाटक का सजीव पात्र है। सिपाही , दुर्जन , सत्यवीर जैसी अनेक शक्तियो ं का विरोध करती है। दीन तथा असहाय औरत पर हर के एक अत्याचार करता है। विपती के चरित्र में भाव-भावनाओं का समावेश अधिक होने के कारण सात्विक तथा आहार्य अभिनय का समावेश हो गया है।

८.युवक :-

युवक नाटक का नायक है। वह स्वभाव से धैर्यशील है। अपने अभिनय द्वारा दर्शको ं के मन मे चेतना भर देता है। युवक बकरी नाटक का शक्तिशाली पात्र है। युवक विचारो ं से क्रांतिकारी है। वह न्याय के पक्ष में लड़ने वाला व्यक्ति है। समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा को समूल नष्ट करना चाहता है। युवक को दूसरों के दबाव में रहना पसंद नहीं है। वह राजनीति तथा राजनेताओं पर प्रहार करता है। किसी कार्य को सिद्धावस्था तक पहुँचाने का प्रयास करता है। उसका वर्तन नायक के वर्तन के समान है। युवक नाटक में अंगिक वाचिक अभिनय का परिचय देता है। नाटक में इसका अभिनय सजीव एवं जिवंत बन गया है। अभिनेयता की दृष्टी से यह सशक्त पात्र हैं।

अन्य पात्रः-

बकरी नाटक में मुख्य पात्रों के साथ-साथ गौण पात्र भी कार्यरत हैं। इसमें काका , काकी , चाचा , एक ग्रामीण , तीसरा ग्रामीण , चौथा ग्रामीण आदि अन्य पात्र हैं। इन सभी पात्रों ने नाटक में अपना सहयोग देकर नाटक को अभिनेय बनाया है।'बकरी' नाटक के पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ है।इसीलिए वे दर्शकों के सामने प्रभाव छोड़ जाते हैं।नाटक के गौण पात्र रंगमंच पर घटना और प्रसंग के अनुसार उपस्थित होकर अभिनय कला में योगदान देते हैं।

सारांश बकरी के नाटक का प्रत्यक पात्र अभिनय के योग्य है । दुर्जनसिंह , विपती , युवक जैसे पात्र अभिनय के माध्यम से दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं ।

लडाई

' लडाई ' नाटक में कुल ४६ पात्र हैं । इसमें ४० पुरुष पात्र और ६ स्त्री पात्र हैं। नाटक का नायक सत्यव्रत है । सत्यव्रत की पत्नी नायिका है । पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण सुविधा के लिये पात्रों का विभाजन करना आवश्यक है । नाटक में विशेष पात्र और गौण पात्र शामिल हैं । विशेष पात्रों में प्रिंसिपल , दरोगा , कंडक्टर , दूकानदार , अधिकारी , संपादक , डॉक्टर , बुद्धिजीवी , महेश्वरानंद आदि हैं । बाकी सभी पात्र गौण हैं ।

१. सत्यव्रत :-

सत्यव्रत ' लडाई ' नाटक का नायक है । वह स्वभाव से उसका धैर्यवान है। वह प्रखरता के साथ दर्शकों के सामने आ जाता है । सत्यवीर अभिनयशीलन पात्र है । उसका अभिनय पूरे नाटक पर छा जाता है । नाटक में नायक के गुण उसके व्यक्तित्व में झलकते हैं । सत्यव्रत सत्य के पक्ष में लड़ने वाला है । वह खुद ईमानदार है , इसलिए दूसरों से ईमानदारी की अपेक्षा करता है । वह अन्याय , अत्याचार , को खत्म करने पर तुला है । वह अपने व्यवहार में मातृभाषा का उपयोग करने के पक्ष में है । उसे संस्कृति के प्रति लगाव है । वह रिश्वतखोरी का विरोध करता है । अपने कार्य पर उसका पूरा विश्वास है । वह गैर- व्यवहार का विरोध करता है । सत्य की लडाई में हवालात में कैद होता है । सत्य की रक्ष करते-करते वह प्राणार्पण कर देता है । सत्यव्रत की भूमिका करने वाला अभिनेता सशक्त और सक्षम होना आवश्यक है । तभी वह पात्र सजीव प्रतीत होगा । इस पात्र में अंगिक, वाचिक , सात्विक और आहार्य सभी प्रकार के अभिनय की संभावना है ।

SHIVAJI UNIVERSITY

२. प्रिंसिपल :-

प्रिंसिपल अंग्रेजी भाषा के हिमायती हैं । शिक्षा व्यवस्था में अपना सहयोग देनेवाला विशेष पात्र है ।वे इस यंत्रना में परिर्वतन करना चाहते हैं। अपनी भाषा में बात करने से डिसिप्लिन बिगडती है , ऐसा मानते हैं । इनके मन में अपनी संस्कृति के प्रति अरुचि है । सरकार ने शिक्षा संबंधी जो कानून बनवायें है , उनका पालन करना चाहते हैं । वे अनुशासन नहीं बरततें । यह पात्र अभिनय में कम प्रभाव छोड़ जाता है ।

३. कंडक्टर :-

यह अभिनय की दृष्टि से नाटक का यादगार पात्र है । कंडक्टर के अभिनय से ही मालूम होता है कि वह एक टपोरी पात्र है । टिकट की बजह से सत्यव्रत के साथ लड़ता है । वह भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है । सत्यव्रत को पागल कहकर उसका मजाक उड़ता है । वह उपस्थित लोगों के सामने गुंडगिरी करता है । इस पात्र की बोलचाल का ढ़ंग उसके व्यक्तित्व का परिचय देता है। सत्यव्रत को धक्का मारकर चला जाता है ।

४.अधिकारी (भार्गव):-

राशन दफ्तर में भार्गव अधिकारी है । सरकारी कामकाज की ओर अनदेखी करते हुए गपशप लड़ाता है। जो कर्मचारी लोग रिश्वत लेते हैं ; उनकी की सहायता करता है । कामकाज निपटने के बजाय सत्यव्रत जैसे व्यक्तियों को शिकायत लिखकर शिकायत पेटी में डालने को कहता है । अधिकारी कामचोर बना हैं । सरकारी कर्मचारियों में दिखाई देनेवाली सभी खुबियाँ इसमें हैं।

५. संपादकः-

दैनिक 'सत्यपथ' का संपादन कार्य संपादक करता है । झुठे समाचार से जनता को दिशाहीन बनाता है । संपादक मतलबी व्यक्ति है । वह भ्रष्टाचारी है । सत्यव्रत से चिठ्ठी के बदले लेख लिखवाना चाहता है । अपने अखबार में वह सच्चाई का पालन करने का मात्र ढ़ोंग करता है । अखबार में झुठे समाचार से जनता को दिशाहीन करता है । संपादक मतलबी

व्यक्ति है । वह भ्रष्टाचारी है । इसलिए तो वह सत्यव्रत से चिठ्ठी के बदले लेख लिखवाना चाहता है । अपने अखबार में वह सच्ची खबरें छपवाता नहीं । संपादक की राजनेताओं , उच्चपदस्थ लोगों के साथ साठगाँठ है । वह सबको बिका हुआ समझता है । 'सत्यमेव जयते' लिखकर उसपर अविश्वास दिखाता है । इससे स्पष्ट हो जाता है संपादक का व्यक्तित्व बहुरंगी है । इस पात्र में अभिनय की पूर्ण संभावना है ।

६. डाक्टरः-

डाक्टर सरकारी अस्पताल में काम कर रहा है । वह अपना डाक्टर का कर्तव्य भुल गया है । मरिजों में पक्षपात करता है । वह बड़े लोग तथा उनके रिश्वतदारों को अस्पताल में भर्ति करवाता है । गरीबों के प्रति डाक्टर के मन में अनास्था है । अस्पताल के कामकाज में अन्य व्यक्तियों की दखल अंदाजी अस्वीकार कर देता है ।

७. दरोगाः-

दरोगा 'लडाई' नाटक का विशेष पात्र है । वह अच्छे गुणों के बजाय बुरी करतुतों से अधिक पहचाना जाता है ।दरोगा सत्य की रक्षा करना अपना कार्य नहीं समझता। वह डंड़े के बल पर लागों को धमकाता है ।दरोगा तानाशाही का अमंगल करता है।वह सत्यव्रत को किसी गिरोह का आदमी समझता है।इस पात्र में अंगिक आरै वाचिक अभिनय क्षमता दिखाई देती है ।

८. बुद्धिजीवी :-

यह नाटक का विशेष प्रकार का पात्र है । बुद्धिजीवी समाज के लिए कोई ठोस कार्य नहीं करता है । वह समाज में सम्मिलित होकर कार्य करता नहीं । समय आने पर रास्ते पर उतरना चाहिए । लेकिन वह ऐसा करता नहीं । वह साम्प्रदायिक दंगों को नष्ट करने का कार्य बर्बर समझता है । गाँव-गाँव नाटक के साथ जाकर प्रर्दशनियाँ आयोजित करता है । अपने आपको अस्वस्थ मानता है । इसका व्यक्तित्व दोहरा है । अपने संभाषणों से वाचिक अभिनय का प्रमाण देता है ।

९.महेश्वरानंद :-

महेश्वरानंद परलोक आश्रम के स्वामी हैं। उन्होंने आश्रम में यज्ञ-हवन का आयोजन किया है। वे किर्तन करते हैं। स्वामी जनता को उपदेश देते हैं कि व्यक्ति को अपन मन को शांत रखना है , मन शांत नहीं तो सब मिथ्या है। उनकी दृष्टी से शंका व मिथ्या करने वाला पापी है। वे धर्म का काम कर रहे हैं।स्वामी पश्चिमी शिक्षा का विरोध करते है। नास्तिक लोगों को धर्म का शत्रू मानते हैं। इस पात्र में आहार्य अभिनय अधिक है।

१०.सत्यव्रत की पत्नी :-

सत्यव्रत की पत्नी नाटक की नायिका है। वह पत्नी होने के नाते सत्यव्रत को हरसंभव समझाने का प्रयास करती है। वह घरबार , बच्चें और अपना विचार करती है। वह परिवार को अपना सर्वस्व मानने वाली नारी है। वह सत्यव्रत के सत्य की लडाई में उसका साथ नहीं देती , क्योंकि उसे समाज से अधिक अपना परिवार अधिक प्रिय है। उसके मन में अपने पति के प्रति प्रेमभाव है। वह स्वतंत्र विचार करने वाली औरत है। सत्यव्रत की पत्नी आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करने वाला सबसे सशक्त पात्र है।

११.अन्य पात्र :-

' लडाई ' नाटक में पात्रों की संख्या अधिक है , फिर वह दृश्यों के अनुकूल बनाई गई। नाटक की वातावरण निर्मिती में ऐसे पात्र विशेष भूमिका अदा करते हैं। नाटक में ऐसे अनेक पात्र हैं। कुल पात्रों की संख्या देखेंगे तो ये गौण पात्र अधिक मात्रा में आये हैं। लडाई नाटक में रोटीवाला , आदमी-१ , आदमी-२ , आदमी-३ , आदमी-४, यात्री , चपरासी , सिपाही , बदमाश , भिखारी , चाटवाला , लडका-१, लडका-२, लडका-३, लडका-४, लडकी-१, लडकी-२, लडकी-३, लडकी-४, नर्स , मिनिस्टर का आदमी आदि अनेक गौण पात्र हैं। ये पात्र रंगमंच पर कुछ समय के लिए ही आ जाते हैं। नाटक में पात्रों की भरमार हैं फिर भी उन सभी पात्रों में अभिनेयता के गुण मौजुद है।

लडाई नाटक में पात्रों की भीड़-भाड़ हैं । सत्यव्रत एक प्रमुख पात्र है । उससे अन्य पात्र जुड़े हुए हैं । नाटक में अनेक पात्र सक्रिय हैं । नाटक के सभी पात्र नियमबद्ध पद्धति से रंगमंच पर उपस्थित होते हैं ।

अब गरीबी हटाओ

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के इस नाटक में कुल मिलाकर १२ पात्र हैं । जिसमें १० पुरुष पात्र और २ स्त्री पात्र हैं ।

१. नटः-

'अब गरीबी हटाओ'नाटक में ' सत्यमंडली ' कम्पनी के एक नट है । नट की अंहम् भूमिका है । नाटक के कथानक को गति प्रदान करनेवाला पात्र है । वह प्रथम विदूषक बनकर रंगमच पर आ जाता है । नट नाटक का सूत्रधार है । वह आज के राजनेताओं पर व्यंग्य करता है । नट राजनीतिक परिस्थिति को उजागर करता है । वह नाटक और राजनीति को अलग-अलग मानता है । वह असत्य का नाटक करना पसंद नहीं करता । वह राजनेताओं को कमजोर वृत्ति के समझता है, क्योंकि वे गरीबी हटाने में नाकाम हो जाते हैं । गरीबी की समस्या के लिए राजनेता जिम्मेदार है । आज के युग में वह क्रांति करना चाहता है । झूठ का विरोध करना नट का स्वभाव रहा है । राजनीति के कारण सभी व्यवस्थाओं का अस्तित्व मिट जाता है; इसलिए नट एकजूट होकर लोगों को अन्याय का विरोध करने के लिए कहता है । नाटक के प्रारंभ से मंच पर अभिनय करता रहता है ।

२. नटीः-

नटी नट के साथ रंगमंच सदा ही उपस्थित रहकर अपनी अभिनय कला को प्रस्तुत करती है । ' सत्यमंडली ' नाटक कम्पनी में काम करती है । नटी की अपने काम के प्रति सच्ची निष्ठा है । वह अपनी पहचान गरीब रंगकर्मी के रुप में कराती है । राजनीति का कलाक्षेत्र पर आक्रमण हो रहा है , ऐसा विचार उनके मन में आता है । वह राजकीय परिस्थिति में बदलाव की आशा करती है । नटी नाटक में नृत्य , गायन के साथ अभिनय भी करती है ।

३. नेताजीः-

अब गरीबी हटाओ नाटक में नेताजी एक प्रमुख पात्र है । वह अपने आपको नाटक का स्वयंघोषित सूत्रधार कहलवा लेता है । नेताजी तानाशाही का राज करता है । वह कानून का सहारा लेकर जनता को डराता-धमकाता है । राजनीति में कलाकार का सहयोग लेकर लोगों को अपने जाल में फँसाना चाहता है । पुलिस के साथ उनकी साठगाँठ है । पुलिस की मदद से विपक्षी लोगों का समाचार लेना चाहता है । नेताजी अभिनय करना नहीं जानता ।

४. मुख्यमंत्रीः-

'गरीबन के पुरवा' नामक गाँव में सांस्कृतिक उत्सव का उद्घाटन करने के लिए मुख्यमंत्री आते हैं । गाँववालों के सामने नाटकीय भाषण देते हैं । मुख्यमंत्री हरिजन लोगों के प्रति सहानुभूति जताते हैं । गाँव की समस्याओं से परिचित होते हैं । मुख्यमंत्री गरीबी हटाने को प्राथमिकता देते हुए नये मंत्रालय का निर्माण करने का आश्वासन देते हैं । गरीब लोगों का कल्याण करना चाहते हैं। इनका वाचिक अभिनय सुंदर बन गया है ।

५. कृषिमंत्री :-

मुख्यमंत्री जी के साथ सांस्कृतिक उत्सव के उद्घाटन समय कृषिमंत्री भी आये हैं । गाँव के प्रति कृषिमंत्री का कोई लगाव अथवा मतलब नहीं है । समस्याओं को सिर्फ सुनना उनका काम है , निवारण करना नहीं । हरिजनों के लिए कुँआ खुदवाने का आश्वासन देते हैं । मंत्री सांस्कृतिक समारोह के इंतजाम पर खुश है । यह पात्र आहार्य अभिनय से युक्त है ।

६. सरपंच :-

सरपंच गाँव का प्रमुख है । वह ऐसा दिखावा करता है कि वह गाँव की भलाई के बारे में सोचता है,पर ऐसा है नहीं। सरपंच जातियता को बढ़ावा देता है । वह निम्नवर्ग की असुविधाओं से बेखबर रहता है । बडे नेताओं तक उसकी पहुँच है । सरकारी अधिकारी से मिलकर लोगों पर अन्याय , अत्याचार करता है । गरीब बच्चों के लिए उनके मन में जरा भी हमदर्दी नहीं है । सरपंच के चरित्र वाचिक अभिनय से युक्त है ।

७. राजाः-

राजा नाटक में मध्ययुगीन का प्रतिनिधित्व करता है । वह स्वभाव से स्त्री-लपंड है । राजा औरत की सुंदरता से मोहित होता है ।औरत के भावी पति को जेलबंद कर देता है । राजा असहाय और मजबूर लोगों का नाजायज फायदा उठाता है। वह भोग विलास में रमता है । वह स्त्री को भोग्या वस्तु मानता है और स्त्री का अनादर करते हैं। राजा के अभिनय में अंगिक , वाचिक दोनों का समावेश हो गया है ।

८. दरोगा :-

दरोगा राजतंत्र व्यवस्था का अंग है । राजनेता के सहारे गरीब जनता पर अन्याय करता है । वह बेगुनाह व्यक्तियों को जेल में बंद करता है और गुनहगार को छोड़ देता है । जन-सामान्य पर झुठे मुकादमें दायर करता है । औरत को जेल में झुठे सपने दिखाकर सरपंच के साथ मिलकर उसपर बलात्कार करता है । दरोगा मुख्यमंत्री की चापलूसी करता है । दरोगा का अभिनय अंग विक्षेप तथा उसकी वाणी से प्रकट हो जाता है ।

९. औरत :-

औरत नाटक का विशेष पात्र है । कथावस्तु में औरत का अधिक महत्व है । नाटक का कथानक औरत के आसपास घुमता रहता है । औरत गरीबी से त्रस्त , भुख से बेजार सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करती है । औरत अपने बच्चों के भविष्य के लिए अपना सम्मान , शील तक दाँव पर लगा देती है । औरत सुंदर है , लेकिन सुंदरता उसके लिए शाप साबित होती है । अनेक लोग उसका नाजायज फायदा उठाते हैं ।दरोगा के मिठे शब्दों के जाल में फँसकर अपना सर्वस्व गँवा देती है ।औरत का अभिनय सात्विक होने के साथ-साथ आहार्य भी है ।

१०. आदमी :-

आदमी को झुठे मुकदमे मे फँसाया जाता है । उसका परिवार का सपना चकना चुर हो जाता है । आदमी का स्वभाव क्रांतिकारी विचारों का है । मजबुर होकर वह गुनाह के रास्ते पर चल पड़ता है ।वह राजनीतिक व्यवस्था का शिकार है ।

अन्य पात्र :-

' अब गरीबी हटाओ ' नाटक में प्रहरी , ग्रामीण , मंत्री आदि अन्य गौण पात्रों का समावेश हुआ हैं। इन पात्रों का रंगमंच पर आगमन और निगमन क्रमानुसार होता रहा है । रंगमंच पर पात्रों की भीड़ नहीं है । सभी पात्र सक्रिय रुप में दर्शकों के सामने प्रकट होते हैं । नाटक के गौण पात्र भी अभिनेय हैं ।

निष्कर्ष

पात्र योजना के निष्कर्ष में इतना कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर जी के पात्र अपनी जगह यथार्थ का दर्शन कराते हैं । अपनी जगह पर सही ठहरते हैं । वहीं से पाठक एवं दर्शकों पर प्रभाव डालते हैं । पात्र की दृष्टि से पात्रों का लाभ उठाया जा सकता है । कहीं-कहीं पात्रों की भीड़ भी दिखाई देती है , फिर भी घटना और यथार्थ को ध्यान में रखा गया है । पात्रों की नाटक में सक्रिय भूमिका रही है । खटकने वाले पात्र कम नजर आते हैं । सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के सभी नाटकों के पात्र अभिनेय हैं ।

समन्वित निष्कर्ष

कथावस्तु और पात्र योजना के अध्ययन के उपरान्त कहा जा सकता कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों की कथावस्तु अभिनय के अत्यंत नजदीक है । नाटकों की कथावस्तु में सरलता एवं प्रभावक्षमता , प्रवाहमयता , एवं मौलिकता का दर्शन होते हैं । अभिनय कला का विकास कथानक के साथ-साथ अभिनेय पात्रों से अधिक होता है । पात्र सामान्य लोगों के निकट हैं । इसलिए कथानक और पात्र दोनों ही वास्तविक प्रतीत होते हैं । सक्सेना के नाटकों में पात्रों की संख्या घटना या प्रसंग के अनुसार कम-अधिक हो गई है । अतः सर्वेश्वर के नाटक कथावस्तु और पात्रों दोनों ही दृष्टि से अभिनेय है ।

संदर्भ

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाःसंपूर्ण गद्य रचनाएँ-२ पृ.१५

२. वहीं। पृ.३९

३. वहीं। पृ.५६

४. वहीं। पृ.६३

५. वहीं। पृ.६९

६. वहीं। पृ.१०८

७. वहीं। पृ.४३

८. वहीं। पृ.६६

९. वहीं। पृ.९९

१०. वहीं। पृ. ६७

११. वहीं। पृ.१०३

१२. वहीं। पृ.१०६

१३. वहीं। पृ.११०